

मध्यप्रदेश गान

सुख का दाता, सब का साथी, शुभ का यह संदेश है,
मां की गोद, पिता का आश्रय, मेरा मध्यप्रदेश है।

विंध्याचल सा भाल, नर्मदा का जल जिसके पास है,
यहां ताप्ती और बेतवा का पावन इतिहास है।
उर्वर भूमि, सघन वन, रत्न सम्पदा जहां अशेष है,
स्वर-सौरभ-सुषमा से मंडित, मेरा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता, सब का साथी, शुभ का यह संदेश है,
मां की गोद, पिता का आश्रय, मेरा मध्यप्रदेश है।

क्षिप्रा में अमृत घट छलका, मिला कृष्ण को ज्ञान यहां,
महाकाल को तिलक लगाने, मिला हमें वरदान यहां।
कविता, न्याय, वीरता, गायन, सब कुछ यहां विशेष है,
हृदय देश का यह, मैं इसका, मेरा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता, सब का साथी, शुभ का यह संदेश है,
मां की गोद, पिता का आश्रय, मेरा मध्यप्रदेश है।

चंबल की कल-कल से गुंजित, कथा तान, बलिदान की,
खजुराहो में कथा कला की, चित्रकूट में राम की।
भीमबैठका आदिकला का, पत्थर पर अभिषेक है,
अमृतकुंड अमरकंटक में, ऐसा मध्यप्रदेश है।

सुख का दाता, सब का साथी, शुभ का यह संदेश है,
मां की गोद, पिता का आश्रय, मेरा मध्यप्रदेश है।

अनुक्रमाणका

विषय	पृष्ठ संख्या
संगठन गीत	अंतिम पृष्ठ
सैद्धान्तिक भूमिका	04
कार्यपद्धति	05
एक इकाई	08
कार्यकर्ता एवं कार्यकर्ता विकास	09
कार्यक्रम	12
प्रवास	14
सम्पर्क	15
आचार पद्धति-परम्परा	15
संगठनात्मक रचना एवं गतिविधियां	16
आन्दोलनात्मक	17
सदस्यता / अर्थप्रबन्धन	18

सैद्धान्तिक भूमिका

अपने कार्य का लक्ष्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण।

भारत एक पुरातन राष्ट्र है। वैभवशाली जीवन एवं गौरवशाली इतिहास रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में विश्व को मार्गदर्शन देने वाला राष्ट्र रहा है। आन्तरिक शैथिल्यता एवं बाह्य (बाहरी) आक्रमणों के कारण एक हजार वर्षों तक की गुलामी से समाज में अनेक विकृतियाँ उत्पन्न हुई।

राष्ट्र को पुनः सशक्त एवं वैभवपूर्ण बनाने का लक्ष्य सामने रखकर कार्य करना। भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए उसके आधार पर वैज्ञानिक युग की आवश्यकतानुसार नयी रचना खड़ी करना यानी स्वदेशी को युगानुकूल एवं विदेशी को स्वदेशानुकूल करना अपना दायित्व है।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण अर्थात् समृद्ध, स्वाभिमानी, सुखी एवं स्वावलम्बी भारत, यानी सबको भोजन, आवास, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा स्वसंस्कृति एवं युगानुकूल समाज व अर्थ-व्यवस्था की पूर्ण स्थापना। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सशक्त एवं देशभक्ति से ओत-प्रोत कर्मचारी संघ खड़ा करने हेतु हम निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं।

भारत एक चिर-पुरातन राष्ट्र है। यहाँ एक सबल चेतनायुक्त राष्ट्र-जीवन विद्यमान रहा है। हमारी संस्कृति ही राष्ट्र का प्राण तत्व है। जीवन के चतुर्विध पुरुषार्थ (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की कल्पना से परिपूर्ण समग्रतापरक एकात्म जीवन दर्शन पर आधारित, श्रेष्ठतम, जीवन मूल्य यहाँ विकसित रहे हैं।

दुर्भाग्यवश आन्तरिक शैथिल्य एवं बाह्य आक्रमणकारियों के षडयंत्रों के कारण राष्ट्र कमशः अवनति की तरफ बढ़ा। हम लड़ाइयाँ हारे लेकिन गुलामी सर्वमान्य नहीं रही। राष्ट्रीय स्वाधीनता व पुनर्निर्माण का देशव्यापी संग्राम अनवरत चलता रहा। राजनैतिक धरातल पर आर्य, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, राजा दाहिर, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, चैन्नमा, लाचित बड़फुकन, विरसा मुण्डा, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी जी, राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, वीर सावरकर, डॉ. हेडगेवार, दत्तोपंत ठेंगड़ी आदि असंख्य भारत माँ के बेटों ने इस कार्य में अपनी आहुति डाली।

उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए वैभवयुक्त शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के पुनर्निर्माण हेतु समाज-जीवन में आयी विकृतियों को दूर करने के संकल्प को लेकर हम कर्मचारी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का कार्य समाज के किसी एक क्षेत्र विशेष का नहीं यह बहुआयामी कार्य है। कर्मचारी क्षेत्र में इस कार्य को करना अपने संगठन का दायित्व है। हम एक आदर्श कर्मचारी आन्दोलन खड़ा करना चाहते हैं, जो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। यह कार्य तीन मूलभूत संकल्पनाओं या अवधारणाओं पर आधारित है।

एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता निर्माण प्रमुख है : पंच परिवर्तन को ध्यान रखकर समाज और अपने कार्यक्षेत्र में विकास करना पंच परिवर्तन में समरसता, स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य, कुटुंब प्रबोधन एवं पर्यावरण जागरूकता को अपनाया है मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ परिवार भाव से कार्य करने वाला संगठन है इसलिए परिवार की भांति मातृशक्ति को पूर्ण सम्मान एवं सुरक्षा के साथ अपने प्रमुख कार्यों में सहभागिता एवं सशक्तिकरण के लिए कार्य करना है

हमारा बोध वाक्य है

देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम

1. रचनात्मक दृष्टिकोण: राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का कार्य रचनात्मक कार्य है। ईमानदारी, परिश्रमी, सामाजिक संवेदनशीलता एवं त्याग आदि गुणों का विकास व्यक्ति में हो तथा वह स्वयं प्रेरणा से राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर कार्य करे। इस हेतु विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों का संचालन करना।
2. परिवार की कल्पना: अपना संगठन कर्मचारियों का ट्रेड यूनियन नहीं है। अधिकारी / कर्मचारी मिलकर राष्ट्रहित के लिए कार्य करें, इस प्रकार का वातावरण तैयार करना।
3. दलगत एवं सत्तावादी राजनीति से ऊपर: हम किसी दल के अंग नहीं हैं। राजनैतिक सत्ता प्राप्त हमारा करना उद्देश्य नहीं। विभेदमूलक राजनीति से ऊपर रहकर राष्ट्रनीति से प्रेरित होकर लोक कल्याणकारी कार्य करना
- 4 कर्तव्य : एक श्रेष्ठ नागरिक होने के नाते शासन के नियमों एवं समाज के नियमों का पालन करना हमारा श्रेष्ठ नागरिक कर्तव्य है इसके साथ अन्याय के विरुद्ध अपने पक्ष को मजबूती से रखना भी हमारा कर्तव्य है

कार्यपद्धति

कार्यपद्धति सूत्र

- ◇ अपनी विशेषताएं एवं कार्य पद्धति शास्त्र शुद्ध है।
- ◇ विशेषताओं का प्रत्यक्ष उपयोग।
- ◇ बैठक संपर्क / प्रवास और कार्यक्रम, ये अपनी कार्यपद्धति के प्रमुख अंग हैं।
- ◇ सहज, सदस्यता अथवा कार्यक्रम के निमित्त से संपर्क कार्यक्रम, कार्यालय में अनौपचारिक चर्चा, इस पद्धति से सहज ही एक अच्छा कार्यकर्ता का निर्माण होता है।
- ◇ सभी स्तरों पर निर्णय हेतु सामूहिकता तथा व्यवस्था में अनेकों का मत सहभाग करने का प्रयत्न रहता है।
- ◇ प्रत्येक के लिए काम और प्रत्येक काम के लिए व्यक्ति ।

पूर्व योजना एवं पूर्ण योजना

- ◇ कर्मचारी विविध माध्यमों से आता है। तो कभी छोटी-छोटी जिम्मेदारी लेते लेते उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाता है। साथ-साथ कार्यकर्ताओं के साथ परस्पर संबंध एवं वातावरण के कारण आए हुए अच्छे अनुभवों से वह सहज रूप से कार्यकर्ता बन जाता है।

बैठक

- ◇ बैठकें अनेक प्रकार से होती हैं परन्तु निर्णयात्मक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यकारिणी की बैठक होती है।
- ◇ सामूहिकता की दृष्टि से बैठक महत्वपूर्ण होती है।
- ◇ बैठक में अपना विचार रखना व दूसरों के विचार भी सुनना व अंत में सभी के विचार से निर्णय हो एवं उसे सभी स्वीकार करें।

◇ बैठक के पूर्व तैयारी बैठक के लिए अपेक्षितों की सूची तैयार करना, सूचना को सुनिश्चित करना, बैठक में अपेक्षितों से बैठक के विषय पर अनौपचारिक चर्चा करना।

विषय सूचना व पूर्व तैयारी

- ◇ बैठक में अनुपस्थितियों की पूछताछ व बैठक के विषय को उन तक पहुंचाने की व्यवस्था।
- ◇ बैठक के पश्चात् लिए गए निर्णयों को क्रियान्वित करना और निर्णयों की समीक्षा करना।

बैठक के प्रकार

◇ कार्यकारिणी बैठक, सामान्य बैठक, कार्यक्रम संबंधी बैठक, टीम बैठक, संगठन समिति बैठक और समीक्षा / योजना बैठक।

संपर्क

- ◇ संपर्क कार्य, यह हमारी कार्यपद्धति की आत्मा है।
- ◇ कार्यकर्ता ने स्वयं प्रत्यक्ष से अनेक व्यक्तियों से मिलकर परस्परिक संबंध के द्वारा नवीन कार्यकर्ता का विकास

संपर्क के प्रकार

◇ प्रमुख व्यक्तियों से संपर्क, दायित्व प्राप्तकर्ता से संपर्क, साथ में आए नये कर्मचारियों से संपर्क करना। असंपर्कित कर्मचारियों से संपर्क, आर्थिक सहयोग करने वालों से संपर्क, अधिकारियों से संपर्क, विषय विशेषज्ञों से संपर्क, संघ के विविध क्षेत्र प्रमुखों से संपर्क।

- ◇ प्रत्येक प्रकार के संपर्क में विषय अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु संपर्क सूत्र एक ही है।
- ◇ संपर्क की सूची व्यापक सभी को सम्मिलित करने वाली होनी चाहिये।
- ◇ संपर्क की पूर्व योजना एवं पूर्व तैयारी होनी चाहिए।
- ◇ संपर्क करते समय राज्य कर्मचारी संघ के संदर्भ में आसपास की घटनाओं के विषय में जानकारी होनी चाहिए। बोलते समय परिस्थित को ध्यान में रखना चाहिए।
- ◇ देशकाल एवं परिस्थिति का ध्यान रखना चाहिये।
- ◇ संपर्क में नियमितता होनी चाहिए।
- ◇ संपर्क में आत्मीयता होनी चाहिए।
- ◇ संगठन के प्रगति का आधार पारदर्शिता है।
- ◇ संपर्क रचना प्रत्येक इकाई, ब्लाक, तहसील जिला प्रांत और राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए।
- ◇ इकाई स्तर पर सभी प्रकार के संपर्क व्यवस्था एवं दायित्व वितरण होना चाहिए।
- ◇ संपर्क में आने वाली परेशानियों में धैर्य एवं प्रतिकारत् होने की तैयारी आवश्यक है।

कार्यपद्धति विशेषताएँ

म.प्र. राज्य कर्मचारी संघ का प्रभावी विकास संगठनात्मक रचना के कारण हुआ जिसका मुख्यकार्यकर्ता (कर्मचारी / अधिकारी) है। हमारे कार्य की विशेषता हमारी कार्यपद्धति, जो कार्यकर्ता को केन्द्रबिन्दु मानकर धीरे-धीरे विकसित हुई, हमारी कार्यपद्धति की विशेषताएँ निम्न है:

1. सामूहिकता।
2. सहजता के साथ अनुशासन का पालन।
3. पारस्परिकता।
4. पारदर्शिता।
5. मत अनेक निर्णय एक।
6. मतभेद संभव पर मन भेद नहीं।
7. टीम कार्य पद्धति।
8. सभी व्यक्ति महत्वपूर्ण अपरिहार्य कोई नहीं।
9. पद नहीं दायित्व।
10. गुणों की चर्चा सर्वत्र कमियों की यथा स्थान।
11. प्रसिद्धि परान्मुखा प्रसिद्धि व्यक्ति की नहीं संगठन की।
12. हर कार्यकर्ता के लिए कार्य और हर कार्य के लिए कार्यकर्ता।
13. आंतरिक सुधार प्रक्रिया
 - ◆ कार्य पद्धति हमारी विचार धारा का महत्वपूर्ण अंग।
 - ◆ अनामिकता यह संस्कार है।
 - ◆ संपर्क, संवाद, बैठक यह कार्य पद्धति के व्यावहारिक रूप है।
 - ◆ कार्य पद्धति का क्रियान्वयन संवाद, बैठकों के द्वारा।
 - ◆ वर्तमान संदर्भ में कार्य पद्धति का विशेष महत्व है, संगठन के बढ़ते कार्य व प्रभाव के कारण कार्यकर्ता की छोटी गलती से बड़ी हानि हो सकती है। अतः कार्य प्रगति पर अड़िग रहकर ही संगठन मूल उद्देश्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

एक इकाई

इकाई यह हमारे कार्य की सबसे महत्वपूर्ण रचना है

इकाई के बारे में विशेष रूप से सोचने की आवश्यकता है। इकाई को जब हम संबोधित करते हैं तो पाँच बातें ध्यान में आती हैं।

1. कार्यकर्ता 2. कार्यक्रम 3. कार्यकारिणी 4. कार्यालय 5. कोष

कार्यकर्ता :

- ◆ कार्यकर्ता विकास की योजना
- ◆ कार्य विभाजन
- ◆ सर्वस्पर्शिता एवं सर्वव्यापी
- ◆ कार्यकर्ता संभाल की योजना

कार्यक्रम :

- ◆ नित-नवीन प्रयोग
- ◆ व्यवस्था पूर्व योजना
- ◆ उद्देश्य और उपलब्धियाँ

कार्यकारिणी :

- ◆ कार्यकर्ताओं का चयन एवं दायित्व देना।
- ◆ कार्यकारिणी गठन एवं नियमित बैठक।
- ◆ हर कार्यकर्ता के लिये काम एवं हर काम के लिये कार्यकर्ता की योजना

कार्यालय :

- ◆ व्यवस्थित प्रलेखन (Documentation) करना।
- ◆ एकत्रीकरण एवं प्रेरणा का केन्द्र हो।

कोष :

- ◆ छोटी राशि अधिकतम लोगों से संकलित करना
- ◆ हिसाब किताब में पारदर्शिता

इकाई के विकास की प्रक्रिया

आकर्षक इकाई :

- ◆ आकर्षक इकाई बनाने हेतु विविध गतिविधियों पर ध्यान देना आवश्यक है।
- ◆ विविधता पूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- ◆ हमारी मुद्रण सामग्री (Printing Material) आकर्षक कैसे बने।
- ◆ परिश्रम, प्रसार, प्रयोग की योजना बने।

प्रभावी इकाई :

- ◆ प्रभावी इकाई यानी जो अपने कार्य के प्रभाव से नगर में अपनी पहचान स्थापित करती है
- ◆ हम जो बात कहते हैं वो बात ही हमारी पहचान बनना।
- ◆ उदा: भ्रष्टाचार विरोधी, सामाजिक समरसता, राष्ट्रवादी इत्यादि।

◆ शक्ति दिखाने की आवश्यकता न पड़े घोषणा मात्र से ही मांग पूरी हो जाये, ऐसा प्रभाव हो।

◆ हजारों हजारों अधिकारियों कर्मचारियों को आंदोलन में उतारने की क्षमता।

स्थायी इकाई :

◆ इकाई जो स्वयं प्रेरणा से चलती है। कुल इकाइयों में कम से कम 30 प्रतिशत इस तरह की इकाई हो।

सहभागिता :

◆ इकाई को चार पाँच लोग चलाने के स्थान पर पचास कार्यकर्ता चलायें ऐसे सहभाग की योजना हो। हर विषय हेतु टोली तथा कई विभिन्न टोलियों को जोड़कर इकाई चलाने में व्यापक सहभाग बने।

◆ कई कार्य समूहों के गठन से सहभाग बढ़ेगा तथा निर्णय उचित दिशा में होंगे।

◆ आयाम कार्य को सर्वस्पर्शी बनाने में विभिन्न आयामों का विस्तार एवं विकास महत्वपूर्ण।

◆ प्रकल्प के द्वारा कार्यकर्ताओं का नियमित सहभाग बढ़ सकता है।

◆ उदा: अधिकारियों/कर्मचारियों के निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण आयोजित करना, संस्कार केन्द्र, रक्त दाता सूची इत्यादि।

◆ मासिक कार्यकर्ता मिलन, सामान्य बैठक आदि से सहभाग बढ़ सकता है।

◆ विभागीय समितिया/संकुल केन्द्र / विकासखण्ड /तहसील / जिला /संभाग /प्रदेश स्तरीय पुन रचना आवश्यकता और बढ़ते कार्य को देखते हुए समय-समय पर यह पुनर्रचना विकेन्द्रीत व्यापक रचना आवश्यक।

◆ इकाई में एक साथ कई गतिविधियां चले तथा ऐसी कई बातों का आधार हमारी इकाई बने।

कार्यकर्ता एवं कार्यकर्ता विकास

यह शब्द अपने आप में एक विशाल शब्द समूह का संयोजन है। और उसी में कार्यकर्तापन का भाव भी समाहित है। किसी भी संगठन कार्य का आधार व माध्यम वह कार्यकर्ता है। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ में हम कार्यकर्ता को संगठन के साधन के रूप में ना मानते हुए उसे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के भव्य संकल्प के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। कार्यकर्ता याने कार्यक्रम में आने वाला या कार्यक्रमों की योजना करने वाला तक सीमित नहीं है। उससे भी आगे कार्य को करने वाला, कार्य को बढ़ाने वाला, कार्य का विकास करने वाला, कार्य को संरक्षण व पोषण देने वाला। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के विचार को व्यवहारिक स्वरूप देने का योजक भी कार्यकर्ता है।

इस नाते से कार्यकर्ता से कुछ गुण अपेक्षित है, कार्यकर्ता याने

◆ संगठन के सैद्धांतिक पक्ष को समझकर उस हेतु क्रियाशील बनाने वाला।

◆ संगठन की आवश्यकता अनुसार अपने स्वभाव व आदतों में परिवर्तन कर उस हेतु आवश्यक गुणों का विकास जैसे सामूहिकता, अनामिकता, पारस्परिकता, अनौपचारिकता, प्रमाणिकता, पारदर्शिता।

◆ सभी गुणों का व्यावहारिक प्रगटीकरण।

◆ स्व: से सर्वस्व की और संगठन के प्रति स्वाभिमान रखते हुए देश समाज – के किसी भी कार्य हेतु प्रेरित होन। संगठन के भीतर व समाज में रहते समय भी हमारी प्रवृत्ति वैसी ही बने।

◆ शासकीय कार्यालयों व समाज में रहते समय अपनी स्वयं की छबी के माध्यम से दूसरे अधिकारियों /कर्मचारियों को प्रेरित करने वाला।

◆ विचार के प्रति प्रतिबद्धता।

◆ संगठन का गौरव व अभिमान बढ़ाने वाला।

◆ अपने सहज व्यवहार के माध्यम से सहयोगी कार्यकर्ताओं से हृदय स्पर्शी मित्रता।

- ◇ दिन प्रतिदिन अपने नेतृत्व की गुणवत्ता का विकास ।
- ◇ कथनी व करनी में समानता।
- ◇ पहले विचार जन्म लेता है बाद में कृति उस हेतु विचारों की शुद्धता।
- ◇ मन की विशालता।

म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ में एक सामान्य कर्मचारी के रूप में आने म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ - के किसी कार्यक्रम, आंदोलन, गतिविधि आदि के माध्यम से समर्थक और शुभचिंतक बन कर धीरे-धीरे कार्यकर्ता भाव से प्रेरित होता है। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ कार्यकर्ता के नाते स्वाभिमान व गर्व अनुभव करता है।

कार्यकर्ता शब्द में कार्यकर्तापन का भाव छुपा हुआ है। वास्तव में यह साधना है। और साधना वही होती है जहां श्रद्धा और विश्वास होता है, उसी भाव से अनेकविध माध्यम से म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के संपर्क में आने वाला कर्मचारी वह कार्यकर्ता बनता है। और केवल अपना समय ही नहीं पर अपना सर्वश्रेष्ठ संगठन को देने हेतु कटिबद्ध बनता है। और आगे एक सक्रिय कार्यकर्ता, दायित्ववान कार्यकर्ता के रूप में उसकी संगठन यात्रा प्रारंभ होती है।

म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ में जब एक कर्मचारी की कार्यकर्ता के नाते यात्रा प्रारंभ होती है तब साथ-साथ कार्यकर्ता के नाते उसकी विकास यात्रा भी प्रारंभ होती है।

कार्यकर्ता विकास

अधिकारी/कर्मचारी समुदाय यह परिवर्तनशील है। एक प्रवाह के समान संगठन के समीप या उसके भीतर से होता हुआ गुजर जाता है। इस थोड़े समय में उसका बहुआयामी विकास संगठन की नई जिम्मेदारी बन जाती है। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ में विकास की प्रक्रिया औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की है।

व्यक्ति परख :

◇ अधिकारी/कर्मचारी के गुणों की परख उसकी पृष्ठभूमि, प्रकृति, दृष्टिकोण, उसके मित्रता के दायरे, रुचियां, गुण, टैलेंट आदि।

- ◇ परिवार के सदस्यों से संपर्क सुख दुख में सहज मिलना व्यक्ति के नाते एवं माननीय स्तर पर जोड़ना।
- ◇ अनौपचारिक मित्रता-आप उन्हें अपना मित्र समझे उससे ज्यादा आवश्यक वह है कि वह आपको अपना मित्र समझें।

मानवीय अभिगम व्यवहार :

- ◇ गुणों की चर्चा सर्वत्र दोषों की चर्चा यथास्थान
- ◇ परिवर्तनशीलता पर विश्वास हर धातु पिघल सकती है अपने स्नेह की ऊर्जा पर्याप्त होनी चाहिए।
- ◇ गुण व प्रतिभा के आधार पर काम देना दोष दूर करना भी अपना कार्य है।
- ◇ Be & Make में Be अधिक महत्वपूर्ण है।
- ◇ विश्वास पूर्ण वातावरण में बातचीत बैठकों में कार्यक्रम में बुलाना साथ में प्रवास कराना लोगों से बातचीत करने प्रेरित करना।
- ◇ सामूहिकता में आनंद आने लगे ऐसा विकास ।
- ◇ अनौपचारिक बातचीत प्रमुख कार्यकर्ताओं से परिचय व संपर्क करवाना।
- ◇ दिए गए काम व दायित्व को निभाने में मदद करना विभिन्न प्रकार के काम दे, अवलोकन करें, अनुभवों की जानकारी लें, उसके विचार सुने।
- ◇ उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता का विकास व सामाजिक संवेदना हो का जागरण ।
- ◇ संगठन के प्रति प्रतिबद्धता, निष्ठा, समर्पण का भाव जागरण तथा क्षमता विकास हेतु दायित्व बोध पैदा करना।
- ◇ बौद्धिक विकास करना।

- ◆ कार्यकर्ता को Efficient ही नहीं Effective भी बनाना।
- ◆ जीवन को धैर्य प्रदान करने की दिशा में ले जाना।

सावधानियां

- ◆ कोई भी पूर्ण नहीं, हम सभी अपूर्णाक।
- ◆ जैसा हो वैसा स्वीकार्य जैसा चाहिए वैसा बनाना।
- ◆ रेड पेंसिल एप्रोच ठीक नहीं।
- ◆ हमें किसी का भी रिफॉर्मिंग करना ठीक नहीं हमें स्वयं के द्वारा एक अच्छा उदाहरण पर स्थापित करना।
- ◆ गलतियां ठीक करने के लिए समय देना।
- ◆ गलतियों के लिए दंड देना गलत, गलतियां महसूस करा कर उसमें सुधार के लिए औपचारिक वार्ता।
- ◆ वह भी सुनने का प्रयास करना जो वह नहीं कह रहा है।
- ◆ स्वयं के प्रति कठोर अन्यो के प्रति उदार।
- ◆ कार्यकर्ता को पढ़ाई और अच्छी आदतों सूचियों के लिए प्रेरित करते रहना।
- ◆ गुटबंदी, प्रचार, लॉबिंग और दूसरों से खुद को बड़ा महसूस होने देने जैसी भावना को दूर करना।
- ◆ पूर्व के अपराध बोध को समय पर दूर कर वर्तमान कार्य के लिए संभल देना।
- ◆ कार्यकर्ता को Long Rope देना।

कार्यकर्ता व्यवहार

आज की सभी समस्याओं का उत्तर व्यक्ति है, इसलिए व्यक्ति निर्माण महत्वपूर्ण है। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ का कार्यकर्ता केवल कर्मचारी जगत में ही नहीं अपितु समाज में भी म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ का प्रतिनिधि है। जिस कारण समाज में म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ की न केवल छवि बनती है अपितु नए अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने विचार तक ले जाने में अपना व्यवहार भी पहली सीढ़ी बनता है।

- ◆ सबको साथ लेकर चलने की वृत्ति
- ◆ संगठन का कार्य अपनी प्राथमिकता होनी चाहिए
- ◆ हम कर सकते हैं आशावादी दृष्टिकोण
- ◆ केवल मेरा ही सुझाव माना जाए यह सोच गलत
- ◆ मत अनेक निर्णय एक
- ◆ सहयोगी की पूरी बात सुनने का धैर्य रखना
- ◆ व्यक्तिगत प्रसिद्धि से दूर रहना
- ◆ सोशल मीडिया में आवश्यक परहेज, संगठन का प्रचार महत्वपूर्ण
- ◆ आपस में चर्चा करते समय दूसरों की आलोचना नहीं, सब मित्र है यह भाव बने रहना
- ◆ पद दायित्व श्रेष्ठ नहीं कार्य ही श्रेष्ठ अपना व्यवहार ही विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ता के नाते अपना परिचय बने
- ◆ आर्थिक व्यवहार में पारदर्शिता

कार्यक्रम

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक उद्देश्य प्राप्त हेतु व्यक्ति निर्माण को अधिक महत्त्व दिया गया है। और व्यक्ति निर्माण के लिए कार्यक्रम को म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ में प्रभावी माध्यम माना गया है। इसलिए कार्यक्रम यह साध्य के रूप में न देखते हुये हमने उसको साधन के रूप में देखा है। हम कार्यक्रम केवल करने के लिए नहीं करते, कार्यक्रम कार्यकर्ता निर्माण व विकास की फल श्रुति में परिणित होना चाहिए तभी कार्यक्रम की सफलता है।

कार्यक्रम एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों में देशभक्ति, परिश्रम शीलता, अनुशासन, सहकारिता, सामाजिक दायित्व बोध, साहस आदि गुणों के विकास हेतु वातावरण निर्माण होता है। इसलिए कार्यक्रमों के आयोजन में से पूर्व उसकी परिणामकारी उद्देश्य पूर्ति की रचना को बड़ा महत्त्व दिया गया है। उस हेतु उद्देश्य के अनुरूप कार्यक्रमों की रचना के साथ साथ कार्य विकास तथा कार्य विस्तार हेतु भी कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करना।

कार्यक्रमों में योजना यह बड़ा महत्वपूर्ण भाग है कोई भी कार्यक्रम को हम सामान्यतः चार भाग में देकते हैं। पूर्व योजना पूर्ण योजना, प्रत्यक्ष कार्यक्रम, अवलोकन तथा अनुवर्तन

पूर्व योजना :

- ♦ कार्यक्रम तय करना, कार्यक्रम का उद्देश्य, कार्यक्रम का स्वरूप, कार्यक्रम का स्वरूप तय करना आदि का बैठकों में विचार
- ♦ अनेक कार्यकर्ताओं के बीच कार्यविभाजन, अधिकतम कार्यकर्ताओं का सहभाग
- ♦ इस हेतु बार-बार बैठकों की योजना
- ♦ कार्यक्रम पुस्तिका तैयार करना
- ♦ विभिन्न माध्यमों से कार्यक्रम की प्रसिद्धि

पूर्ण योजना :

- ♦ कार्यक्रम के लिए आवश्यक साधन जुटाना कोष, साहित्य, स्थान आदि का विचार
- ♦ सभी अपेक्षितों को निमंत्रण जाना
- ♦ विशेष आमंत्रित, वक्ता आदि से पूर्व में बातचीत
- ♦ आचार पद्धति के अनुरूप कार्यक्रम की रुपरेखा

प्रत्यक्ष कार्यक्रम:

- ♦ क्रियान्वयन के समय निरीक्षण की व्यवस्था, किसने क्या किया? कैसे किया? कार्यकर्ता का मूल्यांकन।
- ♦ कार्यक्रम के दौरान कार्य पद्धति व आचार पद्धति के पालन का आग्रह
- ♦ समय पालन व समय प्रबंधन
- ♦ गीत संचालन आदि में गुणवत्ता
- ♦ उपस्थित कार्यकर्ताओं व प्रतिभागियों की ठीक से जानकारी लेने की व्यवस्था
- ♦ कार्यक्रम एक उत्कृष्ट धारप्रहावी नाट्य जैसा संपन्न होना जिससे उसका प्रभाव सभी पर पड़े (Every Program is a piece of art)

अवलोकन:

- ♦ प्रत्येक कार्यक्रम के पश्चात उसकी समीक्षा प्रगति की दृष्टि से विचार, मात्र आलोचनात्मक नहीं (रचनात्मक दृष्टि से)
- ♦ कितने कार्यकर्ता नए जुड़े? कितने कार्यकर्ताओं को काम दिया? उन्होंने कैसे किया? उनकी कितनी प्रगति हुई या विकास हुआ? नये अवुभव की चर्चा कितने कार्यकर्ताओं को क्षमता बटी।

◇ कार्यक्रम कितना परिणामकारी रहा, आगे की कार्य योजना पर विचार –
अनुवर्तन :

- ◇ कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के संपर्क की योजना
- ◇ प्रतिभागियों से संपर्क कर उनके अनुभव सुनना
- ◇ समग्र कार्यक्रम का आर्थिक व्यय तैयार कार्यकारणी के समक्ष रखना
- ◇ विशेष उपस्थित अथिति व सहयोगियों को आभार करना

ध्यान रखने वाली बातें :

◇ अपने कार्यक्रमों रचनात्मक, संगठनात्मक, आंदोलनात्मक, प्रतिनिधित्वात्मक तथा तीन आग्रह रचनात्मक कार्य
इकाई प्रभाव व सर्वस्पर्शी के बीच सदैव संतुलन बना रहना चाहिए।

- ◇ कार्यकर्ताओं की Talent, Interest और Ideas के अनुरूप कार्यक्रमों की रचना
 - ◇ कार्यक्रमों की विविधता हो, नये-नये प्रकार के कार्यक्रम का आग्रह
 - ◇ कार्यक्रमों के स्वरूप में नयापन, तकनीकी का उपयोग
 - ◇ कार्यकर्ताओं की सहायता करके उनका विश्वास बढ़ाना
 - ◇ अंतिम समय में अनावश्यक हस्तक्षेप टालना
 - ◇ कम खर्च में अधिक प्रभावी कार्यक्रम की योजना
 - ◇ छोटे छोटे स्वरूप में अधिक लोगों से अर्थ संघ की योजना –
 - ◇ Every Karyakram is a piece of Art
 - ◇ पर्यावरण अनुकूल कार्यक्रम की योजना, प्लास्टिक उपयोग न के बराबर
 - ◇ भोजन, अन्न आदि का अधिक व्यय न हो
 - ◇ सुशोभन व स्वच्छता का आग्रह
 - ◇ कार्यक्रम के उद्देश्य के अनुरूप रंगोली, प्रदर्शनी इत्यादि का प्रयोग
- कार्यक्रम से कार्यकर्ता निर्माण :

◇ जब कोई कार्यक्रम करते हैं तो नये नये अधिकारी/कर्मचारी से परिचय आते हैं, उनके – स्वभाव रूचि इत्यादि को
ध्यान में लेना।

- ◇ संपर्क के माध्यम से निकटतम परिचय करना
- ◇ कुछ समय बाद किसी कार्यक्रम में अनुभवी कार्यकर्ता के साथ उनको सहयोगी बनाना
- ◇ कोई विशेष दायित्व देना यश के लिए सहायता करना
- ◇ उसकी कल्पना शक्ति व क्षमता के प्रगटीकरण हेतु विचार विमर्श में सहयोगी बनाना
- ◇ टीम भावना विकसित करते हुए दायित्व देना
- ◇ अलग विकास अलग कार्यक्रमों में विभिन्न प्रकार के दायित्व देते हुए बहुआयामी
- ◇ कार्यकर्ता का निर्माण करना।

प्रवास

म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ एक प्रादेशिक संगठन है। परंतु इसके पाँचवे दशक की यात्रा में इसे जीवित रखने में और यह स्वरूप प्रदान करने में प्रवास का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रवास का अर्थ है अपने स्थान / नगर से उठकर अन्य स्थान पर म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के विस्तार व विकास हेतु प्रयास। प्रवास करने के कारण दुसरे स्थान पर स्थित कार्यकर्ताओं को इस प्रवासी कार्यकर्ता का अनुभव का लाभ मिलता है और कार्य को भी गति मिलती है।

प्रवास सामान्यतः तीन प्रकार के हैं -

१. संगठनात्मक : कार्यकर्ताओं / अधिकारियों / कर्मचारियों से संपर्क हेतु, बैठक हेतु प्रवास,

२. कार्यक्रमात्मक : किसी कार्यक्रम या गतिविधि हेतु प्रवास

३. व्यवस्थात्मक : किसी भी व्यवस्थात्मक विषय हेतु प्रवास, उदहारण के लिए कार्यालय,

1. किसी कार्यक्रम के निमित्त या फिर उसके आयोजन के लिए किए हुए प्रवास को कार्यक्रमात्मक प्रवास कहते हैं। ऐसे प्रवास की योजना मुख्यतः इसलिए होती है कि कार्यक्रम की योजना ठीक से हो एवं ठीक से उसकी रचनाएँ लगे। और इसी कारण से कार्यक्रमात्मक प्रवास की आवश्यकता होती है।

2. संघ कार्य में विभिन्न व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है। अर्थात् कार्यालय व्यवस्था, कोष व्यवस्था, अन्य दैनंदिन व्यवस्थाएँ, जिसको सुचारु रूप से चलाने के लिए व्यवस्थात्मक प्रवास की आवश्यकता होती है।

♦ प्रवास करने के पहले उसकी ठीक से योजना करने की आवश्यकता है।

♦ योजना एक तरफ से नहीं किन्तु प्रवास करने वाले कार्यकर्ता की ओर से और जिस स्थान पर प्रवास निश्चित हुआ है वहाँ पर भी करने की आवश्यकता है।

♦ प्रवास से पहले जहाँ पर प्रवास पर जाना है वहाँ की पूरी जानकारी लेने का उपयोग है।

♦ प्रवास पर जाने से पहले जिस स्थान पर प्रवास होना है उसकी क्या आवश्यकता है, अर्थात् भेटें, बैठक या अन्य कोई विषय, उसको ध्यान में रखकर वैसी तैयारी करना।

♦ पिछले कुछ दिनों में अगर कुछ ऐसा साहित्य का निर्माण हुआ है तो वो भी साथ में लेना उपयोगी होगा। अर्थात् सदस्यता पुस्तके, पोस्टर्स, पत्रक, पुस्तिका, डायरी इत्यादि।

♦ संभव हो सके तो निवासी प्रवास की योजना का आग्रह करना चाहिए क्योंकि उस स्थान के लिए एवं उस प्रवासी कार्यकर्ता के लिए उसका उपयोग है।

♦ प्रवास करते समय ठीक से समय निश्चित करना चाहिए अर्थात् उस प्रवास का उद्देश्य, समय-सारणी इत्यादि।

♦ जिस स्थान पर प्रवास होना है वहाँ पर प्रवास प्रमुख निश्चित करना चाहिए, जिसे प्रवास करने वाले कार्यकर्ता के पूरे प्रवास की जानकारी होनी चाहिए।

♦ प्रवास की लिखित योजना करना और उसपर ठीक से प्रवास करने वाले कार्यकर्ता के साथ योग्य चर्चा करना। पिछले प्रवास के अनुवर्तन के विषयों को भी ध्यान में लेना।

♦ प्रवास में विभिन्न भेटों में, बैठकों में जो चर्चा हुई उसके विषय में उस स्थान के किसी प्रमुख कार्यकर्ता को जानकारी देनी चाहिए एवं उसमें जो 19/20 हो गई होगी उसका अनुवर्तन भी करना चाहिए।

♦ प्रवासी कार्यकर्ता के अनुसार उस प्रवास में आवश्यक बदलाव भी करने चाहिए। अर्थात् प्रवास अगर किसी महाविद्यालय परिसर में है तो उस प्रकार तैयारी, किसी नगर अथवा शहर में है तो उस प्रकार योजना करना।

♦ हर स्तर के प्रवास में निचली इकाइयों में जाने का आग्रह।

♦ कार्यक्रमात्मक प्रवास में वक्ता के नाते जाते समय भी स्थानीय व्यवस्थाओं में लगे सभी कार्यकर्ताओं से परिचय करना।

सम्पर्क

म. प्र. राज्य कर्मचारी संघ की उत्तरजीविता (Survival) प्रवास, संपर्क और बैठक पर निर्भर हैं ये तीनों ही हमारे संगठन की उर्जा प्रदाता हैं। संपर्क एक तरह से संगठन के लिए (जीवनदायिनी) Breathy है इसलिए हम बैठक को सबसे ज्यादा प्रमुखता देते हैं।

सम्पर्क से न केवल हमारी सोच, दिशा, कार्ययोजना कार्यवाही (कार्यवाही) आदि का फैलाव होता है अपितु साधारणतया आमजनों के बीच संगठन सही मायने में धनात्मक दृष्टि के साथ निरंतर पहुंचता है खासकर अधिकारी /कर्मचारी समुदाय के बीच।

लोगों से संपर्क के प्रकार :

- ◆ सभी तरह के म. प्र. राज्य कर्मचारी संघ कार्यकर्ता
- ◆ सामान्य अधिकारी /कर्मचारी
- ◆ हमारे समर्थक अधिकारी /कर्मचारी और शुभचिन्तक
- ◆ सम्पूर्ण (आम) समाज

संपर्क में प्रमुखता :

साधारणतया विभागीय समितिया/संकुल केंद्र / विकासखण्ड /तहसील / जिला स्तर के अध्यक्ष ,सचिव कोषाध्यक्ष के साथ grassroot level पर मिलना चाहिए।

संपर्क का हेतु :

कार्यक्रम, संगठनात्मक बैठक, औपचारिक बातचीत या बैठक, व्यक्तिगत रूप से समाधान या स्वाभाविक वार्ता में तारतम्यता लाता है व्यक्तिगत संपर्क से भ्रांति भी मिटती है। सामूहिकता और सोच भी बैठक, कार्यक्रम और व्यक्तिगत संपर्क से बेहतर होता है। इससे संपर्क का दायरा स्पष्ट हो जाता है।

बेहतर संपर्क कैसे करें :

- ◆ संपर्क सूची बनाकर, कार्यकर्ता सूची बनाकर।
- ◆ पदाधिकारी कार्यकर्ताओं तथा सदस्यों से समय अंतराल में मिलना।
- ◆ संघ की भांति 'गेट पद्धति' प्रणाली की तरह हम स्थान / क्षेत्र/मुहल्ला सह संपर्क, संस्थान सह संपर्क और कार्यकर्ता की रूचि आधार पर तयशुदा सिस्टम अपना सकते हैं। कार्यालय आने वालों, कार्यक्रम में आने वालों और आन्दोलनों में भागीदारों से सूची सह संपर्क।

लक्ष्य तय करें :

- ◆ संपर्क सप्ताह (Obeserving) तय करें।
- ◆ एक वर्ष में एक कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा अधिकारी /कर्मचारी को लाने व ज्यादा से ज्यादा विभागों में भागीदारी से।
- ◆ नये क्षेत्रों में संपर्क, नये अधिकारी /कर्मचारी, नये कार्यकर्ताओं को हमें अपने संपर्क के प्रारंभिक लक्ष्य में रखना चाहिए। संगठक से संगठक स्तर पर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में लक्ष्य भिन्न भिन्न होना चाहिए।

कुछ ध्यान योग्य तथ्य :

- ◆ संपर्क विस्तृत हो सीमित नहीं।
- ◆ हमेशा केवल विशिष्ट लोगों के साथ बैठना या चुने हुए कार्यकर्ताओं के साथ रहना व्यवहारिक नहीं।
- ◆ यदि हम संपर्क Useful करेंगे तो बैठक का मंतव्य भी निकलेगा अन्यथा वह हानिकारक (बेमतलब) रहेगा। इसलिए हमेशा अकेला रहना, निकलना ठीक नहीं।
- ◆ प्रभावकारी संपर्क के लिए Prejudiced Mind और पूर्व कल्पना करना अच्छा नहीं। इससे संपर्क के सभी रास्ते बंद होंगे।

आचार पद्धति - परम्परा

सामान्य प्रचलन में :

- ◆ ध्वज आयताकार भगवा रंग का, बीच में मोनो (बोध चिन्ह) हो।
- ◆ बैठक का संचालन मंत्री द्वारा

- ◇ व्यक्तिगत नाम से लेटर पैड, विजिटिंग कार्ड नहीं, लेटरपैड केवल इकाई का।
- ◇ विज्ञप्ति तय किये गये व्यक्ति के नाम से (सामान्य प्रचलन में प्रचार मंत्री के नाम से)
- ◇ प्रचार संगठन का हो, व्यक्ति का नहीं।

कार्यक्रम के दौरान :

- ◇ कार्यक्रम के पूर्व में संघठन गीत,
- ◇ मंच पर अध्यक्ष, / मंत्री, अतिथि, वक्ता ही बैठे।
- ◇ अध्यक्ष, मंत्री दोनों में से किसी एक द्वारा संचालन, दूसरे के द्वारा आभार प्रदर्शन हो।
- ◇ एक व्यक्ति का स्वागत एक ही बार (स्वागत मंच पर उपस्थित अध्यक्ष, मंत्री या अन्य द्वारा ही)।
- ◇ जिस इकाई का कार्यक्रम है वहां के अध्यक्ष, मंत्री का स्वागत नहीं।
- ◇ अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष, मंत्री की अनुपस्थिति में सहमंत्री मंच पर बैठे।
- ◇ प्रत्येक इकाई के कार्यक्रम की सूचना भारतीय मजदूर संघ के जिला मंत्री एवं विभाग प्रमुख को देना
- ◇ मंच पर चित्र मा. दत्तोपंत ठेगड़ी जी, भगवान विश्वकर्मा जी, भारत माता जी एवं आवश्यकतानुसार अवसर विशेष के आधार पर चौथा चित्र भी रख सकते हैं। चित्र एक ही आकार के हों।

कोष :

- ◇ बैंक खाता अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष के नाम से हो।
- ◇ हर इकाई के स्तर पर ही हिसाब की व्यवस्था हो। कार्यक्रम के पश्चात हिसाब रखना, वस्तु संग्रह का आग्रह रहे।
- ◇ जिला समिति / प्रदेश समिति की बैठक में मासिक हिसाब आये (यह आदर्श स्थिति)।
- ◇ वर्ष में एक बार आंतरिक अंकेक्षण।

संगठनात्मक रचना एवं गतिविधियां

(अ) ब्लॉक एवं तहसील इकाई

तहसील एवं विकासखण्ड स्तर के पदाधिकारी

- 1- अध्यक्ष - एक
- 2- उपाध्यक्ष - दस (दो महिला कर्मचारी)
- 3- सचिव - एक
- 4- सहसचिव - पांच (दो महिला कर्मचारी)
- 5- कोषाध्यक्ष - एक
- 6- संगठन मंत्री - दो (एक सेवानिवृत्त)
- 7- प्रचार मंत्री - एक
- 8- कार्यालय मंत्री - एक
- 9- कार्यकारिणी के सदस्य कम से कम 3 या स्वेच्छानुसार।

सभी तहसील ब्लॉक इकाई के गठन के लिए तहसील ब्लॉक के कुल कर्मचारी संख्या का 20 प्रतिशत सदस्यता अनिवार्य होगा तभी तहसील एवं विकासखण्ड इकाई का निर्वाचन तथा निर्वाचन में सामाजिक सहभागिता को प्राथमिकता

(ब) जिला इकाई

- 1- अध्यक्ष - एक
- 2- कार्यकारी अध्यक्ष - एक
- 3- उपाध्यक्ष - दस (दो महिला कर्मचारी)
- 4- सचिव - एक
- 5- सहसचिव - पांच (दो महिला कर्मचारी)

- 6 - कोषाध्यक्ष - एक
- 7 - संगठन मंत्री - दो (एक सेवानिवृत्त)
- 8 - प्रचार मंत्री - एक
- 9 - कार्यालय मंत्री - एक
- 10 - कार्यकारिणी के सदस्य कम से कम 3 या स्वेच्छानुसार।

जिला इकाई के गठन के लिए जिले में कुल कर्मचारी संख्या का 20 प्रतिशत सदस्यता अनिवार्य होगा जिले में सभी तहसील एवं विकासखण्ड की इकाइयों के निर्वाचन के बाद जिला इकाई का निर्वाचन तथा निर्वाचन में सामाजिक सहभागिता को प्राथमिकता

(ब) रचनात्मक कार्य :

♦ वर्ष में एक अखिल भारतीय कार्यक्रम अवश्य हो

(1) 25 मार्च शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी बलिदान दिवस (2) 23 जुलाई भारतीय मजदूर संघ का स्थापना दिवस

(3) 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती दिवस (4) 28 अगस्त पर्यावरण दिवस (5) 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती

(6) 12 दिसंबर स्वदेशी आंदोलन शहीद बाबू गेन बलिदान दिवस

♦ म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ स्थापना दिवस 6 अक्टूबर

♦ प्रत्येक इकाई में होने वाले विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ-साथ कई अन्य कार्यक्रम भी कर सकते हैं।

♦ रक्तदान एवं वृक्षारोपण अन्य सामाजिक कार्य निश्चित रूप से हो।

♦ 15 अगस्त (स्वाधीनता दिवस), 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) के कार्यक्रम अनिवार्य एवं भव्य रूप से हो।

(स) आन्दोलनात्मक :

♦ वर्ष में कम से कम एक बार तहसील एवं जिला स्तरीय समस्याओं को लेकर मांगपत्र देना।

♦ आंदोलन में लगे कार्यकर्ताओं में उत्साह बना रहे। हर आंदोलन अपेक्षित परिणामकारी हो और समय पर हो, यह आवश्यक नहीं होता। इसलिए हताशा का माहौल न बनाएँ।

♦ आंदोलन की सफलता का व्यापक प्रचार-प्रसार हो।

♦ आंदोलन के अनुवर्तन का प्रयास हो, इस दौरान मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ की रचना में आएँ इसका ध्यान रखें।

♦ आंदोलन हमारे संगठन का एक कार्यक्रम और व्यापक उद्देश्य का एक अंग है।

भूमिका :

म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ की पहचान प्रतिष्ठा आज प्रदेश भर में एक कर्मचारी संगठन के रूप में होती है। म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के कार्यक्रम कार्यशैली और विचारधारा के अनुसार हजारों लाखों कार्यकर्ताओं ने लगातार काम करके इसे और अधिक मजबूत किया है।

महत्व :

समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में चलने वाले सार्वजनिक सामाजिक कार्य समाज के सहयोग से ही संचालित होते हैं। किसी भी कार्य में जन सहयोग तीन प्रकार से हो सकता है तन, मन और धन वर्षभर कर्मचारी क्षेत्र में कार्यरत म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के कार्य एवं कार्यक्रम की शैली अधिकतम कर्मचारी सहभागिता बढ़ने वाली है प्रत्येक कार्य में अधिकतम जनसहयोग जन सहायता ही हमारी उपलब्धि का परिचायक है।

योजना :

आवश्यकता आविष्कार की जननी है हम सभी ने अनेक बार सुना और काम में भी लिया है इसलिए सर्वप्रथम संगठन कार्य में आवश्यकता का आकलन करना होगा अर्थात् वर्ष भर की योजना बनाते समय पूरे वर्ष भर में किए जाने वाले कार्यक्रमों के अनुसार सहयोग के विविध प्रकार माध्यम और व्यक्ति की विस्तृत योजना हमें बनानी चाहिए जैसे -

♦ वर्ष भर के कार्य में किस किस प्रकार के कार्यकर्ता सहयोगिनी की सहायता की आवश्यकता होगी।

♦ वर्ष भर की योजना में किस प्रकार के साधनों की आवश्यकता होगी।

♦ आर्थिक आवश्यकता आकलन अर्थात् वर्षभर का बजट बनाना सदस्यता /धन संग्रह की विस्तृत योजना बनानी चाहिए

◇ खर्च का अनुमान संगठन एवं संस्थाओं के लिए उपलब्धता के आधार पर नहीं आवश्यकता के आधार पर होनी चाहिए।

◇ धन संग्रह के माध्यम

सदस्यता / विविध शुल्क :

सदस्यता बुक के माध्यम से एवं online संगठन की website www.mprks.org से कर सकते हैं आजीवन सदस्यता 10 वर्ष के लिए मान्य होगी प्रत्येक पदाधिकारी को आजीवन सदस्यता लेना अनिवार्य है सदस्यता से वर्ष के विविध कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं प्रतिनिधियों से आने वाला शुल्क धन का एक मुख्य स्रोत होता है जो आवश्यक कार्यों में खर्च किया जा सकता है अन्य माध्यमों से भी धन संग्रह किया जा सकता है जैसे प्रतिनिधि का वर्ग अधिवेशन शुल्क अथवा सहायता राशि आदि।

अर्थप्रबंधन :

◇ म.प्र.राज्य कर्मचारी संघ के किसी भी छोटे बड़े कामों में धन संग्रह बिना रसीद बुक के नहीं करना चाहिए।

◇ धन संग्रह के कार्य में किसी भी स्तर के व्यक्ति को अकेले किसी प्रकार का लेन-देन नहीं करना चाहिए।

◇ संगठन का आय / व्यय विवरण प्रतिमाह बने और वर्ष में एक बार प्रमुख कार्यकर्ताओं के मध्य प्रत्येक स्रोत और खर्च को बताना चाहिए ताकि आर्थिक व्यवहार के संबंध में पारदर्शिता बनी रहे।

◇ प्रदेश एवं जिला में प्रमुख केंद्रों पर बड़ा लेनदेन बैंक के माध्यम से करना चाहिए बैंक खाते का संचालन तीन प्रमुख व्यक्तियों के नाम से हो।

◇ धन संग्रह के कार्य में किसी भी स्तर के व्यक्ति को अकेले किसी प्रकार का लेन-देन नहीं करना चाहिए।

◇ संगठन का अव्यय विवरण प्रतिमाह बने और वर्ष में एक बार प्रमुख कार्यकर्ताओं के मध्य प्रत्येक स्रोत और खर्च को बताना चाहिए ताकि आर्थिक व्यवहार के संबंध में पारदर्शिता बनी रहे।

व्यवस्था-स्थापना - संगठन विकास में वित्त की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

हम अर्थ-संचय के उचित एवं नियमित स्रोत विकसित करने चाहिए। प्रत्येक कार्यक्रम से बचत हो तथा उसका आय-व्यय-लेखन, शुभचिन्तकों की सूची, उनमें सम्पर्क, बैंक खाता एवं कार्यालय की व्यवस्था उचित प्रकार से चले

कार्यक्रम एवं कार्यकर्ता-विकास-

कार्यक्रमों की पूर्व एवं पूर्ण योजना बने, इसके लिए कार्यकर्ता का सहयोग करना, अपने तीनों कार्यक्रमों (रचनात्मक, आन्दोलनात्मक एवं प्रतिनिधित्वात्मक) तथा आग्रहों (रचनात्मक कार्य, परिसर प्रभाव और कर्मचारी परिवार की कल्पना) के बीच सदैव सन्तुलन बनाए रखने का प्रयत्न करना। कार्यपद्धति का अनुपालन एवं कार्यकर्ताओं के आत्म विश्वास में संवर्द्धन का प्रयास।

◇ कार्यक्रम-स्वरूप एवं प्रमुख तय करना।

◇ विस्तृत पूर्वयोजना-पूर्णयोजना-बनाना।

◇ कार्यकर्ताओं के बीच दायित्व-विभाजन।

◇ क्रियान्वयन, निरीक्षण और कार्यकर्ता-मूल्यांकन।

◇ प्रचार-प्रबन्धन की उचित व्यवस्था, 'प्रचार' व्यक्ति का नहीं संगठन का।

◇ कार्यक्रमोपरान्त समीक्षा मात्र आलोचना नहीं, प्रगति एवं परिमार्जन का विचार।

◇ कार्यक्रम में नये-नये प्रयोग और स्वरूपगत नयापन लाने का प्रयत्न।

कार्यक्रम से कार्यकर्ता-निर्माण-

कार्यक्रम में आये नये कर्मचारियों से परिचय व उनके स्वभाव, रुचि, योग्यता आदि का मूल्यांकन कर उनसे अनौपचारिक सम्बन्ध बनाना और उनके जीवन यथा परिवार में समरस होना। थोड़े समय बाद उन्हें अनुभवी कार्यकर्ताओं के साथ कार्य में सहभागी बनाना। कार्यक्रम के पश्चात कार्यक्रम की चर्चा और उसके सम्बन्ध में उनकी प्रतिक्रिया से अवगत होना। नये कार्यकर्ता के विषय में रचनात्मक दृष्टिकोण रखना, त्रुटि होने पर उसे सुधार का अवसर देना, कभी-कभी अनौपचारिक वार्ता के माध्यम से उनके प्रश्नों-शंकाओं का समाधान करना। अच्छे साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देना, उसकी कल्पना शक्ति एवं क्षमता का विकास करने हेतु विविध कार्यक्रमों एवं दायित्वों में सहभागी बनाना। उसमें उत्तरदायित्व, टीम भावना और संगठन विस्तार की चिन्ता।

वंदे मातरम् : भारत का राष्ट्रीय गीत

“वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्!
शुभ्रज्योत्सनाम् पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्॥”

संगठन गीत

मानवता के लिये उषा की किरण जगाने वाले हम।
शोषित, पीड़ित वंचित जन का भाग्य बनाने वाले हम ॥

हम अपने श्रम सीकर से ऊसर में स्वर्ण उगा देंगे।
कंकड़ पत्थर समतल कर, कांटों में फूल खिला देंगे॥
सतत् परिश्रम से अपने हैं, वैभव लाने वाले हम।
शोषित, पीड़ित वंचित जन का भाग्य बनाने वाले हम ॥

अन्य किसी के मुंह की रोटी, हरना अपना काम नहीं।
पर अपने अधिकार गंवाकर, कर सकते आराम नहीं॥
अपने हित औरों के हित का, मेल मिलाने वाले हम।
शोषित, पीड़ित वंचित जन का भाग्य बनाने वाले हम ॥

रोटी, कपड़ा मकान, शिक्षा, आवश्यकता जीवन की।
व्यक्ति और परिवार सुखी हों, तभी मुक्ति होती सच्ची ॥
हंसते-हंसते राष्ट्र कार्य में, शक्ति लगाने वाले हम।
शोषित, पीड़ित वंचित जन का भाग्य बनाने वाले हम ॥

भारत माता का सुख गौरख, प्राणों से भी प्यारा है।
युग-युग से मानव हित करना, शाश्वत धर्म हमारा है॥
जीवन शक्ति उसी माता को, भेंट चढ़ाने वाले हम।
शोषित, पीड़ित वंचित जन का भाग्य बनाने वाले हम ॥